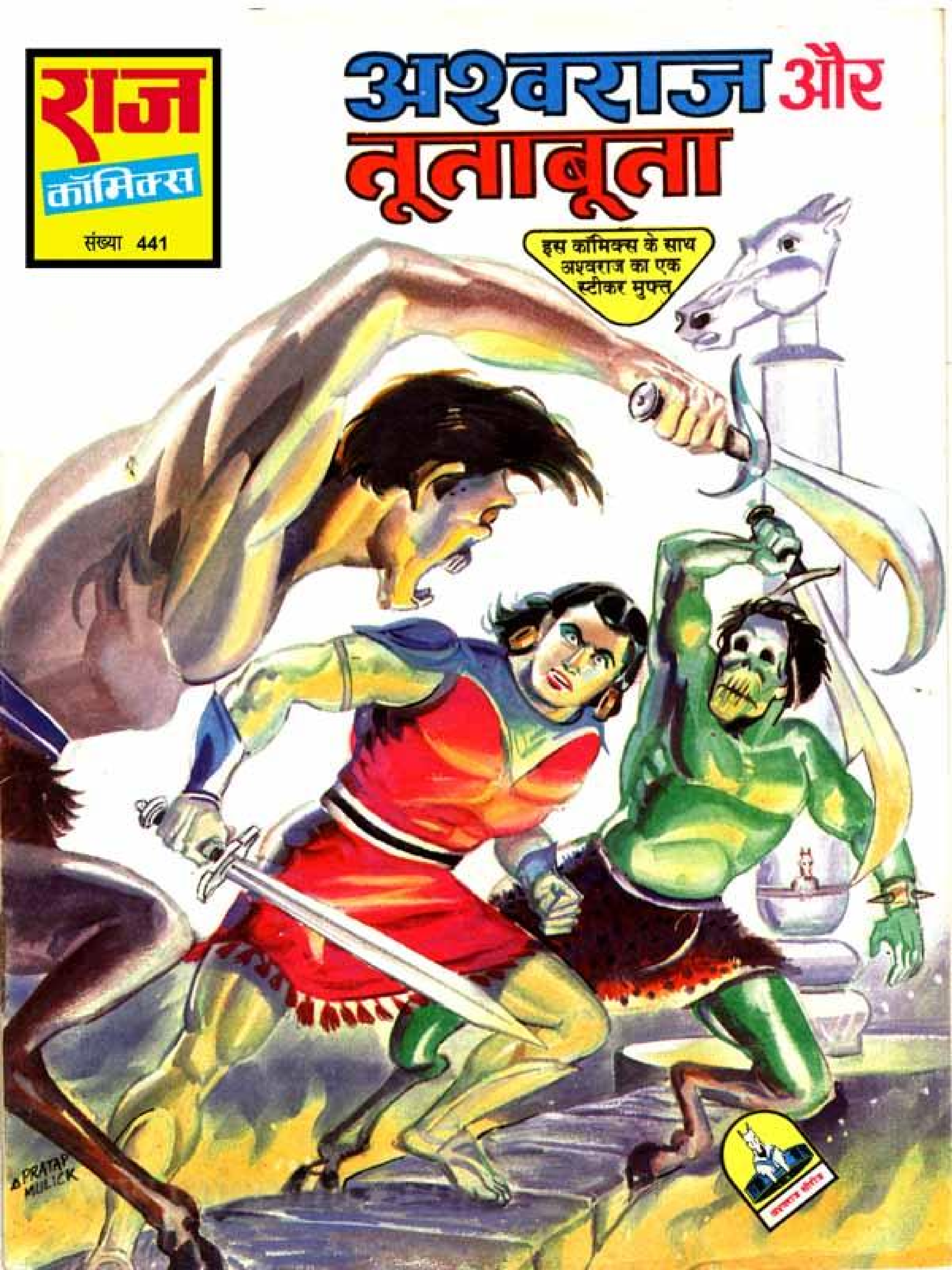

राज
कॉमिक्स
संख्या 441
अश्वराज और
नूताबूता
इस कॉमिक्स के साथ
अश्वराज का एक
स्टीकर मुफ्त
PRATAP
MULICK

अश्वराज और तूताबूता

लेखक •·· तरुण कुमार वाही
सम्पादक •·· मनीष गुप्ता
कलानिर्देशन •· प्रताप मुळीक
चित्रांकन •·· राहुल देशपांडे

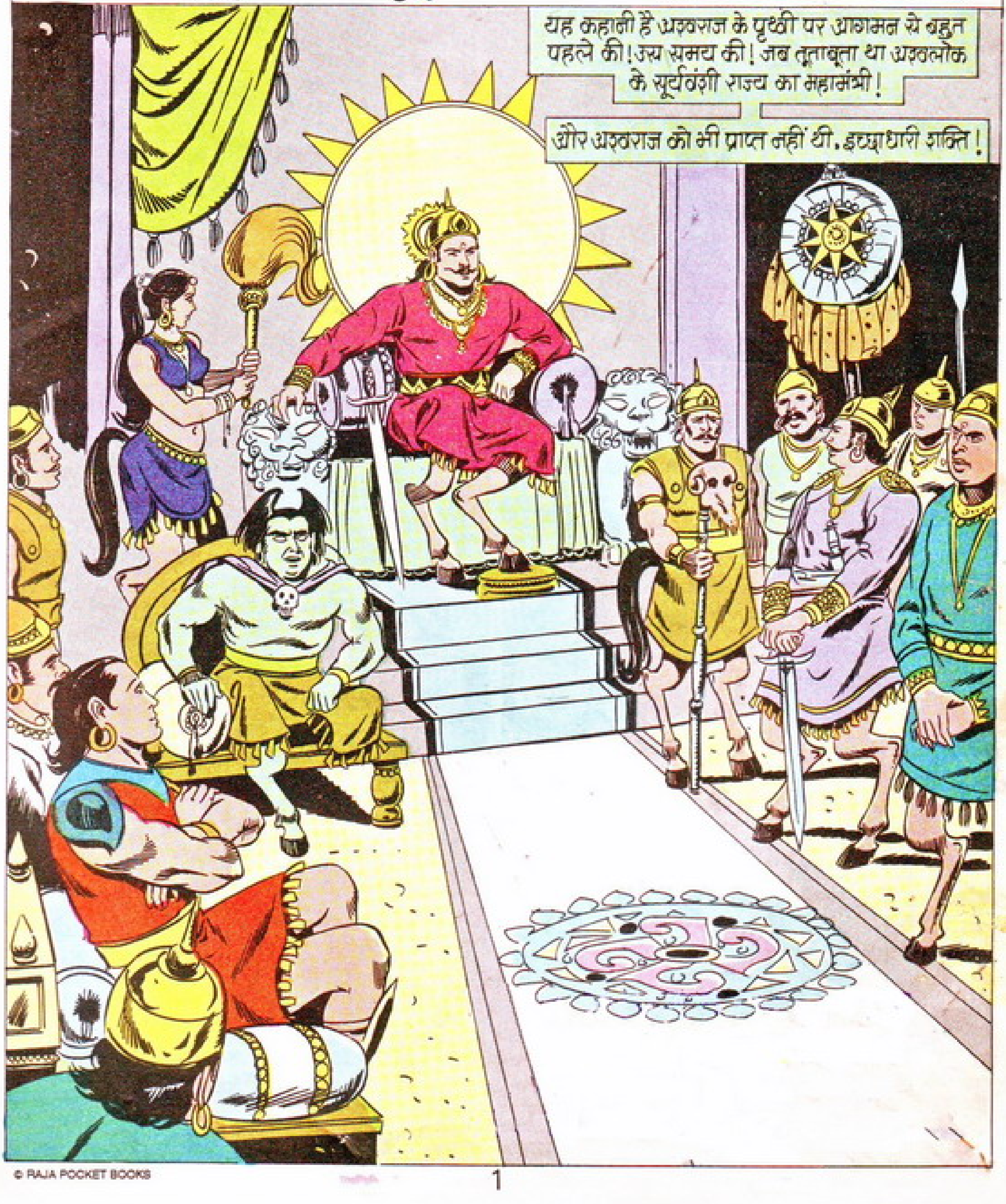

© RAJA POCKET BOOKS

अश्वलोक की दो जातियां...
काली जाति, कलूटा!
सफेद-जाति, सफेदा!
अश्वलोक की काली जाति कलूटा का क्रूर शासक, सम्राट कालिख!
अश्वलोक की सफेद जाति सफेदा और सफादो का सफाया... हमारा लक्ष्य!
अश्वलोक की सफेद-जाति सफेदा को प्राप्त था हिंसक सम्राट सफादो का नेतृत्व!
अश्वलोक की सम्पूर्ण काली जाति कलूटा का विनाश... हमारा ध्येय!
दोनों जातियों में छिड़ता रहता था खूनी-संघर्ष—
हिंसक सम्राट सफादो 'दुष्ट' कलूटों के रक्त से हाथ धोकर बहुत प्रसन्न होते हैं!
कलूटों के मुंह पर कीचड़! छी-छी!

घने 'अश्वसवार' वन में बना वह अग्नि महल रहस्य की कई परतों से लिपटा था—
महल के भीतर से आज्ञा न हो तो परिन्दे की भी क्या मजाल कि प्रवेश कर जाए महल में—
भक्क
महल के भीतर से आज्ञा हो तो भीतर जाने को बन जाता है, एक मार्ग—
चन्द्रवंशी अश्वसम्राट अश्वांतक को क्यों बुलाया है जादूगर हदोरा ने?
अश्वतांत्रिक जादूगर हदोरा—
आइये चक्रवर्ती अश्वसम्राट अश्वांतक!
चक्रवर्ती सम्राट? यह तुमने क्या कहा जादूगर हदोरा?
मैं जानता हूं सम्राट कि आपकी सबसे बड़ी इच्छा है ये। आसन ग्रहण कीजिए!
हां। किंतु सूर्यवंशियों और कुछ बड़े राज्यों जैसे सफादो और कालिख के रहते यह मुमकिन नहीं!

उसका हल भी मैं सोच चुका हूं। अगर आपको सूर्यवंशियों पर विजय पानी है तो अश्व-पर्वत पर स्थित अश्वघाटी से आपको लानी होगी इच्छाधारी अश्वशक्ति!
अगर ऐसी कोई शक्ति अश्वघाटी में है तो मैं उसे प्राप्त करने के लिए खून की नदियां भी बहा सकता हूं।
उसके बाद विदा हो गया अश्वांतक।
हिंसक सम्राट सफादो—
सम्राट सफादो! क्रूर सम्राट कालिख पर विजय पाना आपका ध्येय है?
केवल उस पर विजय प्राप्त करना नहीं जादूगर हदोरा, बल्कि उसका नाश करना चाहता हूं मैं!
बिल्लौटे की आंखों सी चमक रही थीं जादूगर हदोरा की आंखें—
तब तुम्हें प्राप्त करनी होगी अश्वपर्वत पर स्थित अश्वघाटी से इच्छाधारी शक्ति अश्वशक्ति!
मैं प्राप्त करूंगा उसे जादूगर हदोरा!
मक्कारी की कोई हद नहीं थी जादूगर हदोरा की—
आओ.. आओ क्रूर सम्राट कालिख, आओ!
मुझे कैसे बुलाया जादूगर हदोरा?
इसलिए क्योंकि इच्छाधारी अश्वशक्ति के लायक तुम ही लगे मुझे! अब बताओ! सम्राट सफादो का सफाया करना है या नहीं?
उसका अंत मेरे ही हाथों होगा!

तो फिर जाओ! पहले अश्वपर्वत पर स्थित अश्वघाटी से प्राप्त करो इच्छाधारी अश्वशक्ति!
समझो प्राप्त कर ली मैंने जादूगर हदोरा! प्राप्त कर ली वह शक्ति मैंने!
इधर अग्निमहल में गूंज रहा था अश्वतांत्रिक जादूगर हदोरा का अट्टहास!
आ हा हा हा हा! अश्वघाटी की धरती अब रंग जायेगी लहू से!
सब लड़ मरेंगे आपस में ही! उसके बाद अश्वलोक का सम्राट बनूंगा केवल मैं! जादूगर हदोरा! हा हा हा हा!
सम्राट सफादो अपनी विशाल सेना लेकर चल पड़ा अश्वघाटी—
इच्छाधारी अश्वशक्ति लाने के लिए हम अपना पूरा जोर लगा देंगे!
अश्वराज सीरीज का पूरा मजा लेने के लिए पढ़ें:
अश्वराज, कारू का खजाना, अश्वमणि, तिलिस्म का खिलाड़ी, फिर आया अश्वराज, प्रलयंकारी अश्वराज, खून बून्द, इच्छाधारी हत्यारा और अश्वखोर!
सम्राट कालिख दो कदम आगे ही था सम्राट सफादो से—
इच्छाधारी अश्वशक्ति... प्राप्त करने के लिए मैं खून की नदियां बहा दूंगा!

सम्राट अश्वांतक अपनी सेना लेकर चल पड़ा अश्वघाटी की ओर —
सेनापति खुरखंडा! इच्छाधारी शक्ति अश्वशक्ति प्राप्त करनी ही होगी हमें!
सूर्यवंशी सम्राट तारपीड़ो!
क्या? क्या कहा तुमने महामंत्री तूताबूता, इच्छाधारी अश्वशक्ति!
हां सम्राट! और अगर वह इच्छाधारी अश्वशक्ति सम्राट अश्वांतक के हाथ लग गई तो वह प्रलय ढा देगा हम सूर्यवंशियों पर!
महामंत्री तूताबूता! हम खून-खराबा पसंद नहीं करते। किंतु, अब हमारी विवशता हो गई है वह अश्वशक्ति हासिल करना! हम स्वयं प्राप्त करेंगे उसे!
सम्राट तारपीड़ो के नेतृत्व में चल पड़ी सूर्यवंशी की भी सेना अश्वघाटी की ओर —
सेनापति घरघोड़ा! ध्यान रहे। सम्पूर्ण अश्वलोक के अस्तित्व की रक्षा के लिए अश्वशक्ति हमें ही प्राप्त करनी होगी!

और ये महामंत्री तूताबूता किस ओर जा रहे हैं?
अश्वघाटी से अश्वशक्ति प्राप्त करना कोई हंसीखेल नहीं है, जिसे देखो वही मुंह उठाए चला जा रहा है अश्वघाटी!
महामंत्री तूताबूता के कक्ष में प्रवेश करते ही चौंक पड़ा युवराज—
अरे! महामंत्रीजी, आप?
राजकुमार अश्वराज! तुम्हें तुरन्त एक आवश्यक कार्य पर जाना है!
मैं तैयार हूं महामंत्रीजी! किंतु वह आवश्यक कार्य क्या है?
सब कुछ समझा दिया तूताबूता ने अश्वराज को—
निकल पड़ा राजकुमार अश्वराज भी अश्वघाटी की ओर—
सम्पूर्ण अश्वलोक की अश्वता की रक्षा का भार उठाया है मैंने! इच्छाधारी अश्वशक्ति का मेरे पास होना एक वरदान साबित होगा मेरे लिए!

और यह क्या? उफ! इस दृश्य की तो किसी ने कल्पना तक ना की थी—
अश्वतांत्रिक जादूगर हदोरा की योजनानुसार अश्वराज भी बढ़ गया है अश्वघाटी की ओर अश्वशक्ति लाने!
और खूनी खेल की इस साजिश को अंजाम दे रहा था अग्निमहल में बैठा वो शैतान! जादूगर हदोरा—
हा हा हा हा! सभी चालें चल दी हैं मैंने! मोहरों को एक-दूसरे से भिड़ा दिया है!
अब रण-बिगुल बजना बाकी है। उसके बाद मेरे सारे दुश्मनों की कतार ही खत्म हो जायेगी!
अब बचा अश्वराज! जिसके पास होगी इच्छाधारी अश्वशक्ति। अश्वराज को यहां लायेगा तूताबूता। हा हा हा हा!

लाल डोरियां सी खिंच गई थीं शैतानों की आंखों में—
और तब...
हा हा हा हा! सम्पूर्ण अश्वलोक होगा मेरी ठोकर पर!
इतना बड़ा मक्कड़जाल! इतनी बड़ी योजना! उफ!
अश्वघाटी की ओर बढ़ रहा था हिंसक सम्राट सफादो—
आगे बढ़ो! अश्वघाटी का चप्पा-चप्पा घेर लेना है हमें!
अश्वघाटी की ओर बढ़ रहा था क्रूर सम्राट कालिख—
सफेदों के सफाये का ये उत्तम अवसर हम कलूटों के हाथ लगने वाला है! आगे बढ़ो!
अश्वघाटी की ओर बढ़ रहा था अश्व सम्राट अश्वांतक—
इच्छाधारी अश्वशक्ति केवल प्राप्त नहीं करनी हमें, छीन लानी है। हा हा हा हा!
अश्वघाटी की ओर बढ़ रहा था सम्राट तारपीडो—
सम्राट अश्वांतक अपनी पूरी शक्ति लगा देगा अश्वशक्ति प्राप्त करने में। ईंट का जवाब पत्थर से देना है हमें!
और अश्वघाटी की ओर बढ़ रहा था अश्वराज! राजकुमार अश्वराज!
अश्वघाटी में किसी भी खूनी संघर्ष को रोकने की हर सम्भव चेष्टा करनी है मुझे। और यह तभी होगा जब मेरे पास होगी अश्वशक्ति!

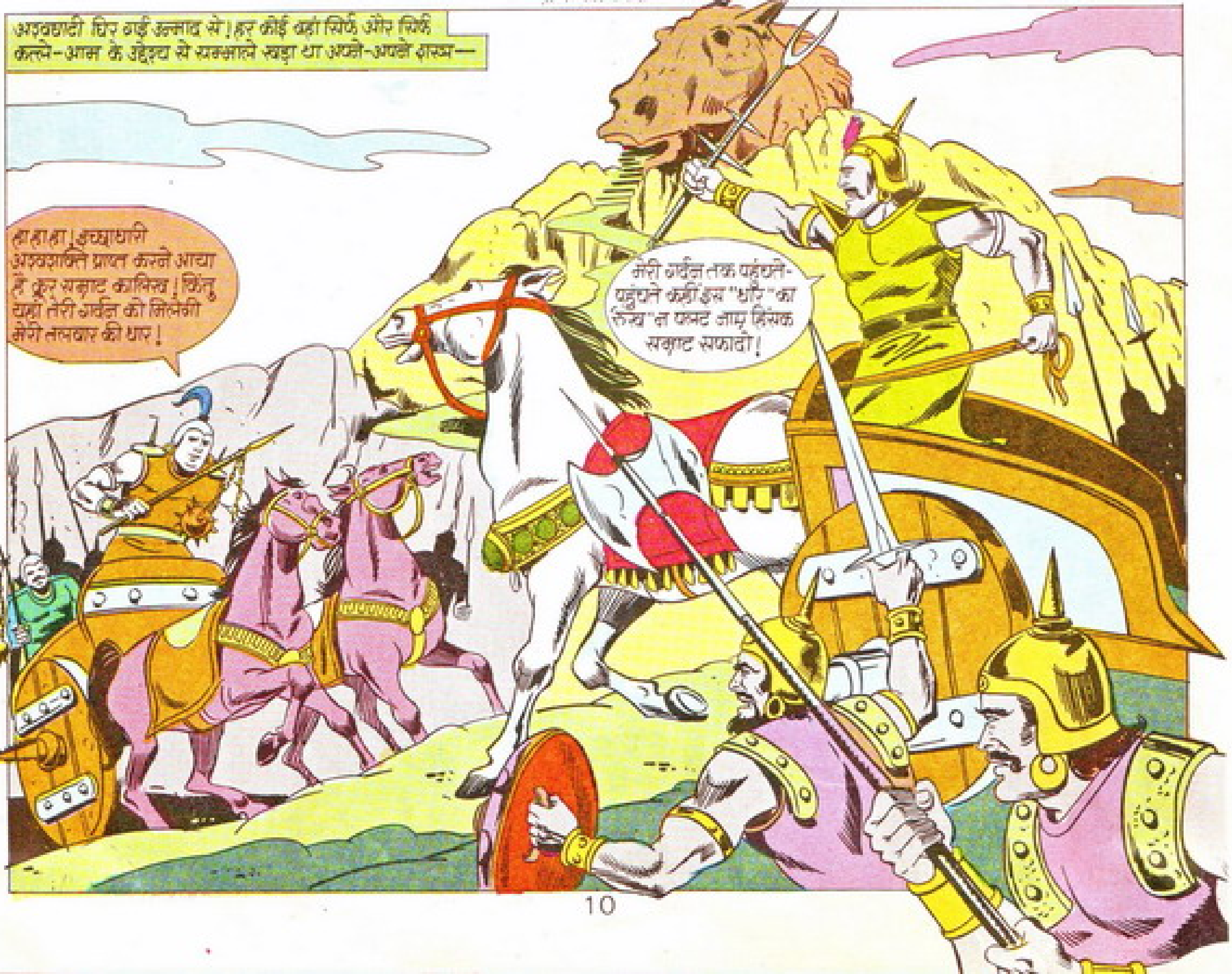
अश्वघाटी घिर गई उन्माद से! हर कोई वहां सिर्फ और सिर्फ कत्ले-आम के उद्देश्य से सम्भाले खड़ा था अपने-अपने शस्त्र—
हा हा हा! इच्छाधारी अश्वशक्ति प्राप्त करने आया है क्रूर सम्राट कालिंग! किंतु यहां तेरी गर्दन को मिलेगी मेरी तलवार की धार!
मेरी गर्दन तक पहुंचते-पहुंचते कहीं इस "धार" का "रुख" न पलट जाए हिंसक सम्राट सफादी!

आक्रमण!!
मारो
मारो!!
काटो काटो!
भिड़न्त! एक खूनी भिड़न्त! टकराव! एक खूरेंज टकराव! युद्ध!
अश्वघाटी की धरती पर प्रथम हाहाकारी युद्ध!

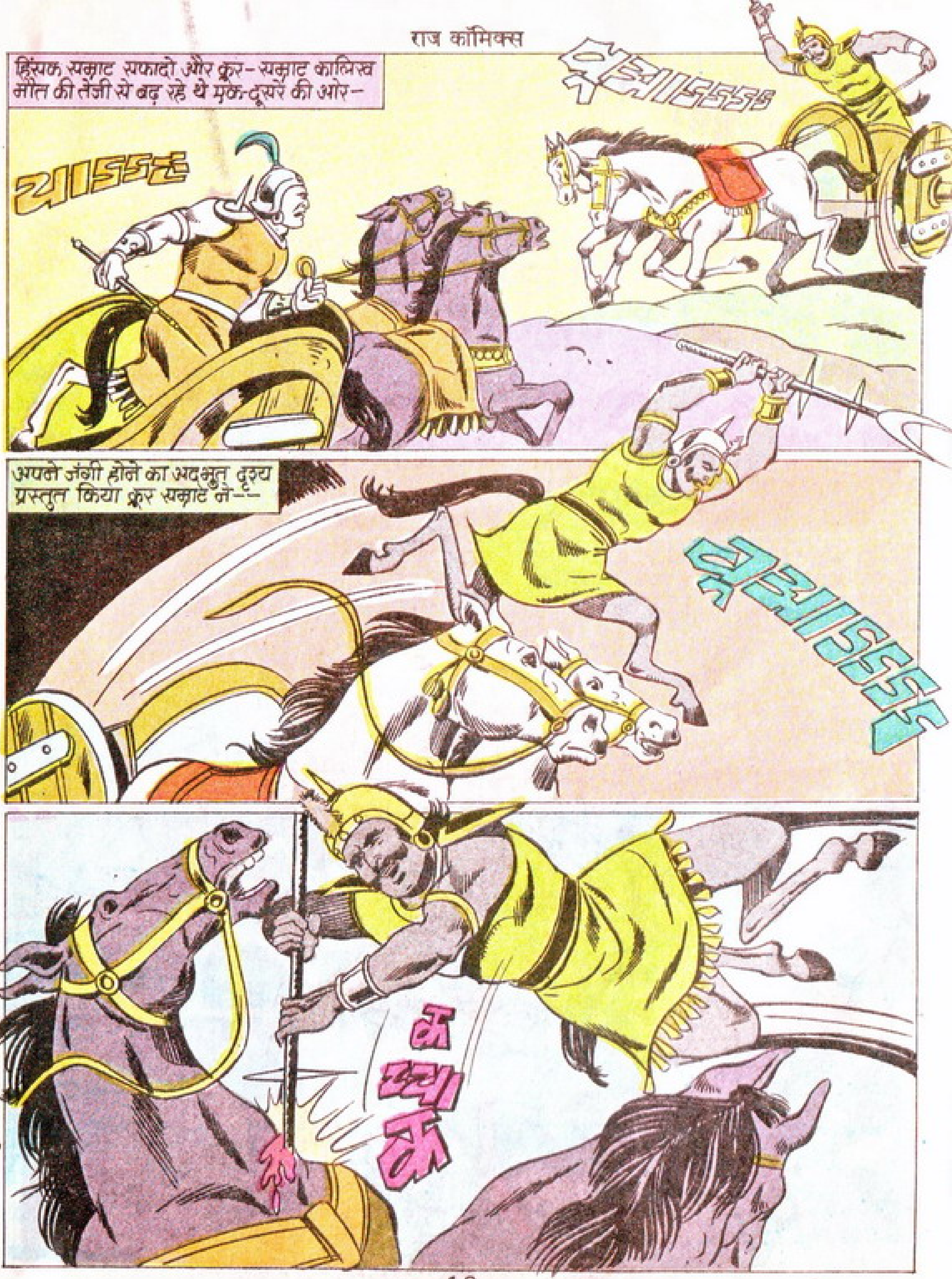
हिंसक सम्राट सफादो और क्रूर-सम्राट कालिख मौत की तेजी से बढ़ रहे थे एक-दूसरे की ओर–
अपने जंगी होने का अद्भुत दृश्य प्रस्तुत किया क्रूर सम्राट ने––

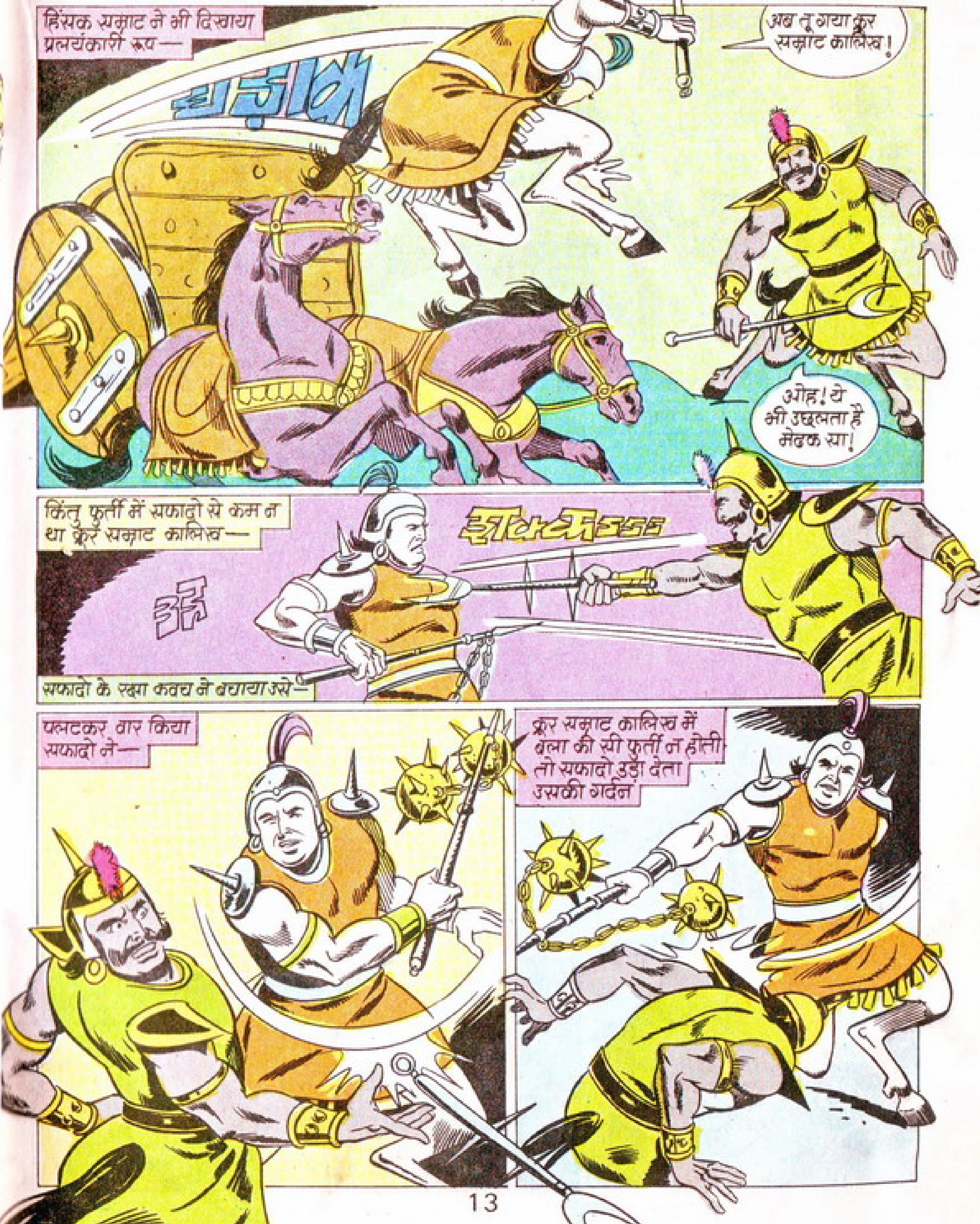
हिंसक सम्राट ने भी दिखाया प्रलयंकारी रूप—
अब तू गया क्रूर सम्राट कालिख!
ओह! ये भी उछलता है मेंढक सा!
किंतु फुर्ती में सफादो से कम न था क्रूर सम्राट कालिख—
सफादो के रक्षा कवच ने बचाया उसे—
पलटकर वार किया सफादो ने—
क्रूर सम्राट कालिख में बला की सी फुर्ती न होती तो सफादो उड़ा देता उसकी गर्दन

तभी गूंज उठा कुछ और भयानक शोर—
मारो! मारो!
हा हा हा! इन सबको समाप्त करके मैं हासिल करूंगा अश्वशक्ति!
चौंक पड़े हिंसक सम्राट और क्रूर सम्राट—
ये तीसरा कौन आ गया इस युद्ध में?
चन्द्रवंशी अश्वसम्राट अश्वांतक? उफ! ये भी इच्छाधारी अश्वशक्ति प्राप्त करने आया है!
हिंसक सम्राट सफादो! अश्वशक्ति प्राप्त करने के लिए चन्द्रवंशी सम्राट हम दोनों को ही नेस्तनाबूद करने की चेष्टा करेगा!
फिलहाल हमें आपसी दुश्मनी भूलकर एक होकर उसका मुकाबला करना चाहिए!
मेरी युद्ध नीति भी फिलहाल यही कहती है क्रूर सम्राट! किंतु तुम भूलना मत कि हम आपस में प्रत्येक क्षण दुश्मन हैं!

कलूटों और सफेदों का युद्ध विराम हो गया—
युद्ध समाप्त करो। दुश्मन सम्राट अश्वांतक अपनी सेना के साथ रणभूमि की ओर आ रहा है!
पहले हमें रोकना है दुश्मन सम्राट अश्वांतक को!
एक हो गए दुश्मन सभी—
मारो!
मारो!
विशाल सेना लेकर आया था सम्राट अश्वांतक—
ओह! दुश्मन एक हो गए! पर फिर भी मेरी सेना का मुकाबला न कर सकेंगे!
भयानक जंग छिड़ गई दोनों सेनाओं के बीच—
गाजर-मूली की तरह कटने लगे सैनिक!
विद्युत सा चलने लगा सम्राट अश्वांतक का शस्त्र—
मेरे चक्रवर्ती बनने में तुम भी रुकावट हो! आज किस्सा खत्म कर दूंगा तुम सब का!
अब मैं बुलाता हूं अपने सबसे ताकतवर नायक चिंघोड़ा को!

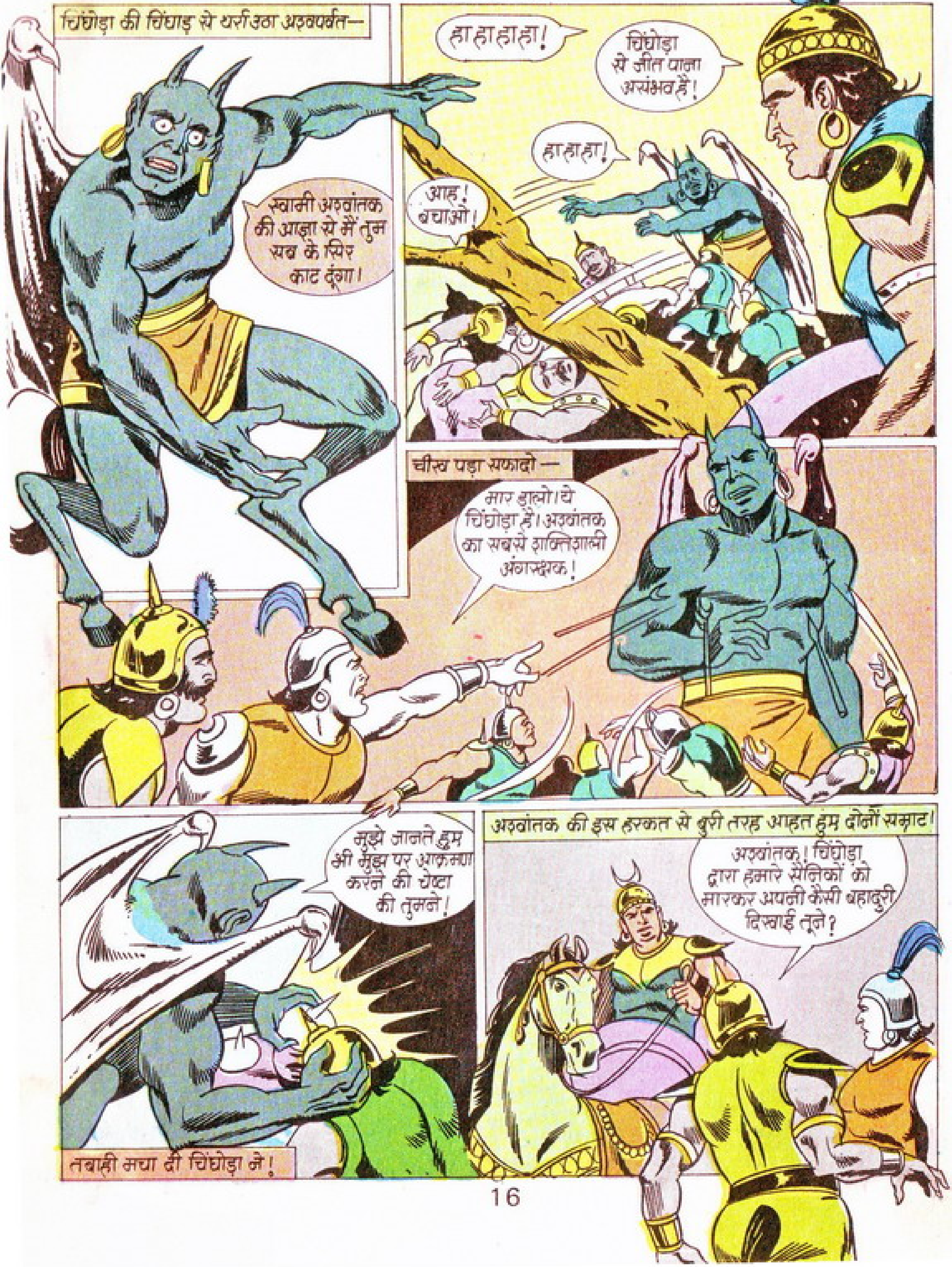
चिंघोड़ा की चिंघाड़ से थर्रा उठा अश्वपर्वत—
स्वामी अश्वांतक की आज्ञा से मैं तुम सब के सिर काट दूंगा।
हा हा हा हा!
चिंघोड़ा से जीत पाना असंभव है!
हा हा हा!
आह! बचाओ!
चीख पड़ा सफादो —
मार डालो। ये चिंघोड़ा है। अश्वांतक का सबसे शक्तिशाली अंगरक्षक!
मुझे जानते हुए भी मुझ पर आक्रमण करने की चेष्टा की तुमने!
तबाही मचा दी चिंघोड़ा ने!
अश्वांतक की इस हरकत से बुरी तरह आहत हुए दोनों सम्राट!
अश्वांतक! चिंघोड़ा द्वारा हमारे सैनिकों को मारकर अपनी कैसी बहादुरी दिखाई तूने?

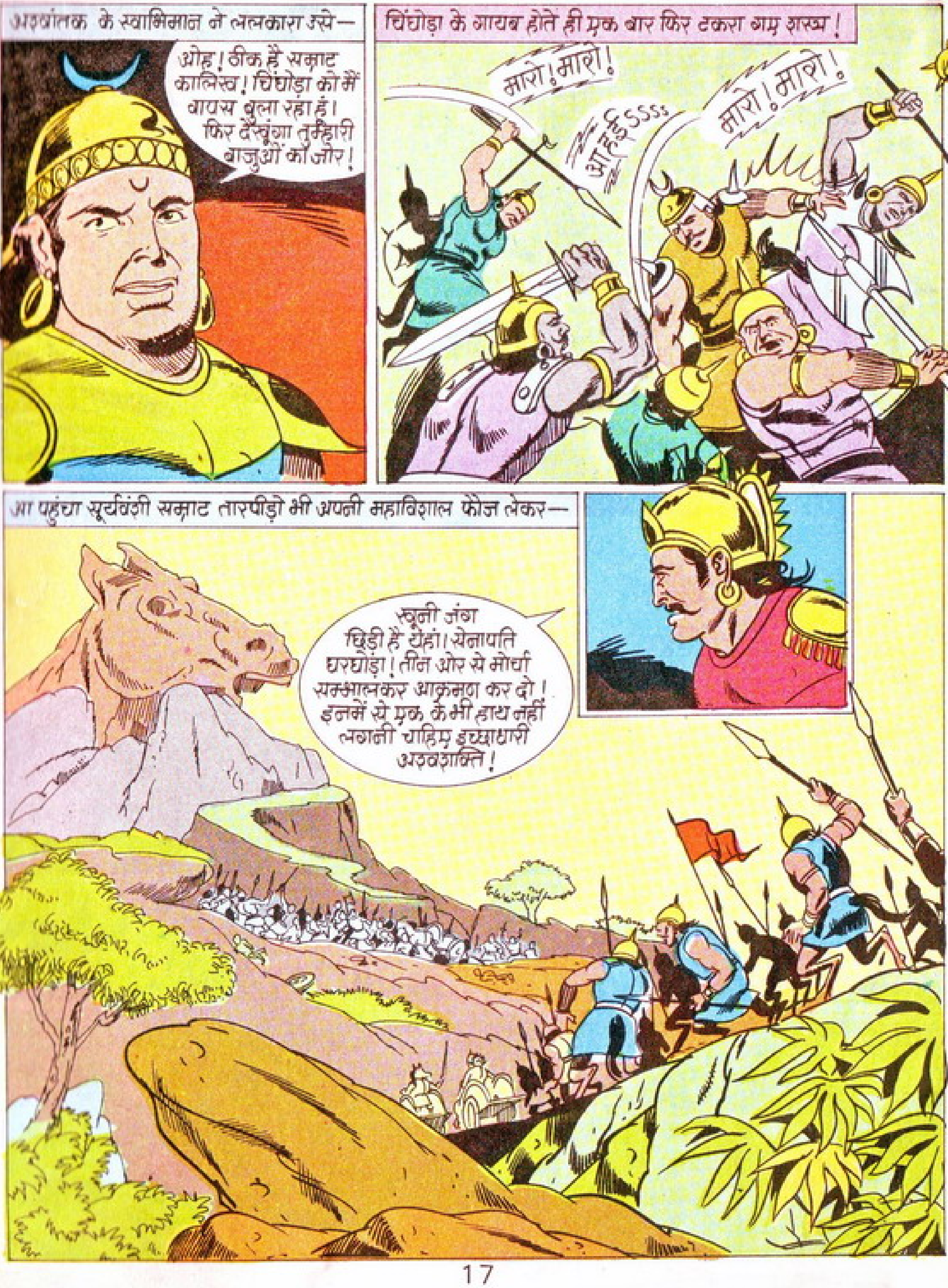
अश्वांतक के स्वाभिमान ने ललकारा उसे—
ओह! ठीक है सम्राट कालिख! चिंघोड़ा को मैं वापस बुला रहा हूं। फिर देखूंगा तुम्हारी बाजुओं का जोर!
चिंघोड़ा के गायब होते ही एक बार फिर टकरा गए शस्त्र!
मारो! मारो!
आह्ह्ह्SSSS
मारो! मारो!
आ पहुंचा सूर्यवंशी सम्राट तारपीड़ो भी अपनी महाविशाल फौज लेकर—
खूनी जंग छिड़ी है यहां। सेनापति घरघोड़ा! तीन ओर से मोर्चा सम्भालकर आक्रमण कर दो! इनमें से एक के भी हाथ नहीं लगनी चाहिए इच्छाधारी अश्वशक्ति!

तीव्र शोर सुन चौंककर सिर घुमाया अश्वांतक ने —
यह शोर कैसा? क्या कोई और भी आ गया है रणभूमि में!
उछल पड़ा वह अपने महानतम् दुश्मन को आता देख —
ओहो! सूर्यवंशी अश्वसम्राट तारपीड़ो!
नरक की शैतानियत टपकने लगी उसके चेहरे पर —
खून की नदी तो बह ही रही थी!
बाढ़! अब तो बाढ़ आयेगी खून की यहां! हाहाहा!
तूफानी झोंकों की तरह शामिल हो गई तारपीड़ो की भी सेना उस युद्ध में —
मारो!
मारो!
मारो!
मारो!
सैलाब सा आ गया —
उई
मर गया
आह
आकाश थर्रा उठा अश्वसम्राटों के शस्त्रों की भयानक ध्वनि से —
टनाक

सब प्यासे थे वहां! खून की प्यास थी हरेक को! हर कोई दूसरे को फाड़ खाने को आतुर था! हैवान लग रहे थे सबके सब! पागल... वहशी!
अत्याचारी शक्ति को हाथ कैसे लगाएगा सफादो! तेरे हाथ तो काट दूंगा अब मैं!
आह!
सेनापति भूखण्डा की तलवार से टपक रहा था ढेरों लहू —
क्रूर सम्राट कालिख! रणभूमि में सिर कटा जाने वाला भाग्यशाली होता है। ला, मुझे दे दे ये सिर!
सम्राट कालिख सेनापति भूखण्डा का वार तो बचा गया, पर सम्राट अश्वांतक का वह वार न बचा पाया वह, जो अश्वांतक ने किया था तारपीडो पर —
स्वट्टाक
न जाने कब होता इस भीषण टकराव का अंत —
मेरा वार बचा अश्वांतक!
वार? हा हा हा!

विलक्षण अश्वमानव अश्वराज–
विलम्ब हो गया मुझे यहां पहुंचने में! उफ़! ऐसा भयानक युद्ध कभी नहीं हुआ अश्वलोक में।
अश्वशक्ति आज से पहले कहां थी? अचानक सबके सब अश्वशक्ति के पीछे क्यों पड़ गए?
एक अश्वशक्ति को पाने के लिए अश्व, अश्व को काट रहा है। जुनून सा सवार है सब पर।
कुछ सोचते-सोचते उसके जेहन में फुलझड़ियां सी छूटने लगीं–
उफ़! आपस में कट मरने को तैयार ये अश्वमानव कहीं किसी के षड्यन्त्र का शिकार तो नहीं हो गए!
और...और जब पिताश्री स्वयं अश्वशक्ति प्राप्त करने जा रहे थे, तो तूताबूता ने मुझे क्यों भेजा अश्वशक्ति लाने को।
लपका वह अश्वपर्वत पर –
इससे पहले कि अश्वपर्वत की ऊंचाई छूने लगे अश्वमानवों की लाशों का पर्वत...
इसी बीच बहुत कुछ सोचता चला गया अश्वराज का कुशाग्र मस्तिष्क–
...मुझे प्राप्त करनी है इच्छाधारी अश्वशक्ति!

राह में ही रुक जाना पड़ा अश्वराज को —
इच्छाधारी शक्ति क्या ऐसे ही प्राप्त कर लेगा तू? चल परास्त कर मुझे!
ओह! यह कौन?
मेरा नाम है चक्कू! चक्कुओं से बना है मेरा जिस्म!
खिल खिल
खिल
आह!
तेरा जिस्म चाहे चक्कुओं से बना हो या तलवारों से। मेरी इस तलवार के आगे तेरी एक न चलेगी!
गहराइयों में गूंजती चली गई चक्कू की चीख की आवाज़!
आगे बढ़ते अश्वराज की राह रोक ली घक्कू ने —
चक्कू से तो बच गया तू, घक्कू से कैसे बचेगा?
?.?
बड़ी कंटीली हैं मेरी छः आंखें! मेरी दो आंखें तेरी हरकतों को देखेंगी। दो तुझे करेंगी सम्मोहित। और दो से मैं तुझे करूंगा मृत्यु के हवाले!
ओह!
पर तेरा ये सिर ही न रहे तो तेरी आंखें क्या अचार डालेंगी!
बेचारा घक्कू!

अश्वपर्वत पर आ पहुंचा अश्वराज!
अब मुझे अतिशीघ्र पहुंच जाना चाहिए अश्वघाटी, अश्वशक्ति के पास!
सर्वप्रथम क्रूर सम्राट ने देखा अश्वराज को—
अरे! यह कौन जा रहा है अश्वघाटी में?
चिल्ला पड़ा सम्राट कालिख—
ठहरो! युद्ध बन्द करो! युद्ध बन्द करो!
वह देखो। जिस अश्वशक्ति को प्राप्त करने के लिए हम आपस में कट-मर रहे हैं, कोई और जा रहा है उसे प्राप्त करने!
अरे
भगदड़ मच गई अश्वशक्ति सर्वप्रथम प्राप्त करने को—
अश्वशक्ति नहीं, उसे मिलेगी मौत!
अश्वशक्ति!
अश्वशक्ति को छू भी न पायेगा वो!

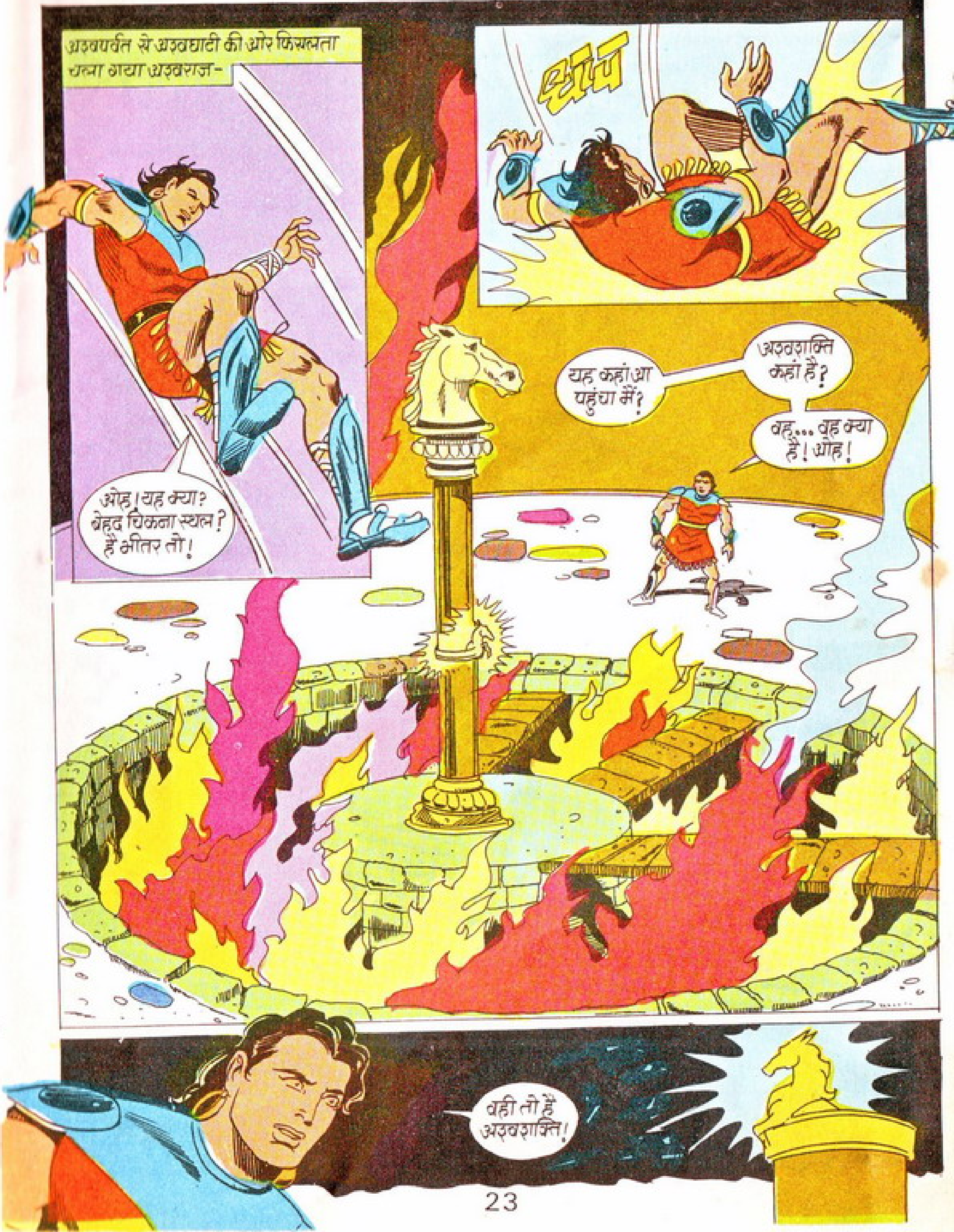
अश्वपर्वत से अश्वघाटी की ओर फिसलता चला गया अश्वराज-
ओह! यह क्या? बेहद चिकना स्थल? है भीतर तो!
स्लैंप
यह कहां आ पहुंचा मैं?
अश्वशक्ति कहां है?
वह... वह क्या है! ओह!
वही तो है अश्वशक्ति!

बड़ी सावधानी के साथ बढ़ चला वह उस संकरे मार्ग पर, जिसके आसपास था आग के दलदल का तालाब —
जरा सी भी चूक का अर्थ होगा एक भयानक मौत!
और बस। उस संकरे मार्ग पर कदम रखते ही जैसे भूकम्प आ गया — —
तेरी मृत्यु तुझे यहां खींच लाई है अश्वमानव!
दोनों ने अश्वराज की गर्दन को निशाना बना एक साथ ही किए वार —
अश्वराज के कदम आ लगे दूसरे मार्ग पर —
दूसरा मार्ग भी खतरों से भरा था —
कब तक बचेगा अश्वमानव!
हा हा हा!
अश्वराज कूद गया तीसरे व अन्तिम मार्ग पर —

वहां भी मौत प्रतीक्षा रत थी—
आओ, आओ अश्वमानव! हमें तुम्हारी ही प्रतीक्षा थी!
उफ! इस प्रकार कूदते-कूदते तो मैं बन्दर बन जाऊंगा!
अब इनका मुकाबला करना ही होगा!
घुमा दी अश्वराज ने भी तलवार—
खटाक
तीर की तरह बढ़ा फिर वह अश्वशक्ति की ओर—
ये शैतान भी मेरे साथ-साथ पहुंचेंगे अश्वशक्ति तक!
मची भीषण मार-काट—
तुम सब मरोगे अश्वराज के हाथों। क्योंकि मुझे यह शक्ति चाहिए अश्वलोक की रक्षार्थ!

रोक पाना असम्भव था अब विलक्षण अश्वमानव अश्वराज को—
ओह!
अश्वशक्ति को स्पर्श करते ही कहीं से सरसराया वह तीर, और—
हिला तक न सका अश्वराज अपना हाथ!
अश्वशक्ति छूटने न दी उसने। होंठ कस लिए!
दर्द से तड़प उठा,
इसे प्राप्त करके रहूंगा मैं!
अश्वशक्ति को झपट लिया अश्वराज ने—
इच्छाधारी अश्वशक्ति प्राप्त कर ली मैंने। और अब करनी है मुझे पूरे अश्वलोक में शांति बहाल!
तभी गूंज उठा एक अलौकिक स्वर—
अश्वराज! नेक विचार हैं तुम्हारे। यह अश्वशक्ति अब सदा के लिए केवल तुम्हारे मस्तक की शोभा बन जायेगी!
अश्वराज के मस्तक पर दमक उठी अश्वशक्ति—
अब तुम इच्छाधारी हो अश्वराज!

ठीक तभी—
तड़क
आहऽऽ
आश्चर्य से फट गईं चकराकर गिरते अश्वराज की आंखें—
महामंत्री तूताबूता तुम! तुमने मुझ पर वार किया?
हां! क्योंकि यह शक्ति चाहिए केवल...!
...जादूगर हदोरा को!
ये मुझे मूर्छित समझ रहा है!
जादूगर हदोरा के अग्निमहल तक पहुंचा दिया गया था अश्वराज!
हा हा हा हा! मैं जानता था कि विशेष नक्षत्रों में जन्मा केवल अश्वराज ही ला सकता है अश्वशक्ति को!
अश्वपर्वत को रणभूमि बनाने के पीछे मेरा जो उद्देश्य था, वह भी पूर्ण हुआ यानी चार बड़े राज्यों की सैनिक शक्ति को काफी हद तक खोखला कर दिया है मैंने!
देवता की तपस्या कर देवता से यह मणि भी प्राप्तकर ली है मैंने, जो अश्वराज की मृत्यु के पश्चात् अश्वशक्ति को सीधे मेरे मस्तक पर शोभायमान कर देगी!

अश्वराज पर गंडासा उठा दिया शैतान ने किंतु यह क्या?
अरे! यह क्या?
उछल कर खड़ा हुआ अश्वराज—
उफ! ये मूर्छित नहीं था!
नहीं जादूगर हदोरा! अश्वशक्ति के अलावा मुझमें जबरदस्त सहनशक्ति भी है। जिसने मुझे मूर्छित न होने दिया!
अश्वराज की तलवार ने उतार दी जादूगर हदोरा की नकली दाढ़ी—
शैतान तूताबूता! बहुत बड़ा खूनी खेल खेला है तूने। पर अब पटाक्षेप हो गया है तेरे खूनी नाटक का!
ओह! तो तुमने मुझे पहचान लिया!
जादूगर हदोरा उर्फ तूताबूता के जीवन का एक ही उद्देश्य है। अश्वलोक का अश्वसम्राट बनना। और उसकी राह में जो आयेगा, वह मारा जायेगा।
तुझे पहचानने में मैंने देर अवश्य कर दी तूताबूता! पर अब तुझे मृत्यु के घाट उतारने में मैं देर कदापि न करूंगा!

अश्वराज के जीवित रहते तेरी ये इच्छा मरकर भी पूर्ण न होगी!
धड़ाक
इसी के साथ झपट ली अश्वराज ने वह मणि भी—
तूताबूता को उछाल फेंका अश्वराज ने—
धड़ाक
सबसे पहले इस मणि को ही समाप्त कर दूं!
नहीं! उफ
अब मैं इसकी शक्ति से जीत नहीं पाऊंगा!
तड़ाक
इसी के साथ गायब हो गया तूताबूता—
मैं एक बार फिर लौटूंगा अश्वराज! एक नये व भयानक षड्यंत्र के साथ!
अरे! कहां गायब हो गया कम्बख्त?
अग्निमहल से वापस अश्वघाटी पहुंचा अश्वराज, तो—
अश्वशक्ति तुम्हारे कारण गई मेरे हाथ से!
अश्वशक्ति के खो जाने का मुझे कोई गम नहीं किंतु अगर वह किसी शैतान के हाथ लगी है तो उसके ज़िम्मेदार तुम हो!
ठहरो! रुक जाओ! बन्द करो ये फसाद!
??
तुम हो ज़िम्मेदार उसके!
पागलों की तरह क्यों लड़ रहे हो तुम सब? तुम्हारी इसी प्रवृति का लाभ उठा रहा था शैतान जादूगर हदोरा उर्फ महामंत्री तूताबूता भी!
मुझे भी तो उसी ने बताया था अश्वशक्ति के बारे में!
क्या? जादूगर हदोरा जिसने मुझे अश्वशक्ति के विषय में बताया!
अश्वराज!
?

हदोश ने ही तो हमें भी बताया था अश्वशक्ति के बारे में!
??
देखो! और तुम सब फंसते चले गए उस शैतान की चालों में जो चक्रवर्ती अश्वसम्राट बनने का स्वप्न देख रहा था!
सम्राट कालिख और सम्राट सफादो को भड़का कर उनमें फूट डालने वाला भी वही था जादूगर हदोश उर्फ तूताबूता!
ओह! हम व्यर्थ ही एक दूसरे के दुश्मन बने रहे! मित्र कालिख! हमें क्षमा करना!
क्षमा तो हमें मांगनी चाहिए! किसी तीसरे के बहकावे में आ गए हम!
सम्राट अश्वांतक अपना सा मुंह लिए खड़ा रह गया —
तारपीड़ो से युद्ध करने का अब ये उचित समय नहीं! तूताबूता के साथ मिलकर ही बनाऊंगा मैं अगली कोई योजना!
अश्वराज! तुमने बचा लिया कलूटों और सफेदों का वंश मिटने से!
हम तुम्हारे आभारी हैं अश्वराज!
अब आप लोग अपने-अपने राज्यों को लौट जाइये और अमन-चैन स्थापित कीजिए!
सब लौट गए —
तब —
किंतु अश्वराज! अश्वशक्ति कहां है?
यह क्या झिलमिला रही है मेरे मस्तक पर!
सचमुच झिलमिला रही थी इच्छाधारी अश्वशक्ति अश्वराज के मस्तक पर!
समाप्त